CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

हिन्दी व्यंग्य परंपरा के सशक्त हस्ताक्षर हरीश नवल

शिल्पा वर्मा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
Email-sv6496509@gmail.com, Mobile-7427094046

First draft received: 07.02.2026, Reviewed: 09.02.2026
Final proof received: 11.02.2026, Accepted: 15.02.2026

शोध सारांश

हिन्दी साहित्य के इतिहास में व्यंग्य लेखन की जिस परंपरा को भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने गति दी थी, उसे प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्णभट्ट, बालमुकुन्द गुप्त, हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, नरेन्द्र कोहली आदि साहित्य पुरोधाओं ने गतिमान रखा। समय के साथ इस यात्रा में अनेक विद्वान् जुड़े तथा इस परम्परा को और अधिक पोषित किया। ऐसे ही एक व्यंग्य पुरोधा डॉ. हरीश नवल हैं, जिनका समूचा चिंतन उनकी सोच और अभिव्यक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का एक सुदृढ़ रूप है। उनका सम्पूर्ण कृतित्व वर्तमानयुगीन हिन्दी व्यंग्य परम्परा की एक अनूठी धरोहर है।

मुख्य शब्द : व्यंग्य लेखन, *सोच और अभिव्यक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण।*

प्रस्तावना

जैसे- जैसे मानव में बुद्धि, भाषा आदि तत्वों का विकास हुआ, वैसे- वैसे वह समाज, सभ्यता, संस्कृति के सृजन और उन्नति की दिशा में प्रयास करने लगा। देखते- देखते समय बीतता गया। जब मनुष्य ने अपने बनाये इन विषयों में विसंगतियां देखीं, तो उसका हृदय उसे कचोटने लगा, तब उनका विरोध शुरू हो गया। इस विरोध के भी कई प्रकार थे। शुरुआत में ये शारीरिक ही रहा होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। समय के साथ परिस्थितियां बदली। बुद्धि तत्व की प्रधानता ने इस विरोध को मौखिक रूप दे दिया, कभी हास्य में तो कभी तीखे स्वर में। ऐसे ही व्यंग्य जन्मा होगा।

अंग्रेजों के शासनकाल में भारत में एक युग प्रणेता का जन्म हुआ – भारतेंदु हरिश्चंद्र उन्होंने एक साहित्यकार एवं व्यंग्यकार के रूप में जनमानस की चेतना में प्राण फूंके। साथ ही 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'भारत दुर्दशा', 'अंधेर नगरी' आदि रचनाओं के माध्यम से व्यंग्य की धुंधली पड़ी तस्वीर भी साफ़ की और इस विधा को तीखापन दिया। उनकी जलाई इस मशाल को थामकर ही प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त जैसे साहित्यकारों जी ने अगली पीढ़ी को रास्ता दिखाया। व्यंग्य की प्रथम पीढ़ी में हरिशंकर परसाई, बाबू गुलाबराय, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, इंद्रनाथ मदान, श्रीलाल शुक्ल आदि पुरोधाओं के नाम आते हैं। दूसरी पीढ़ी शान्ति मेहरोत्रा, नरेन्द्र कोहली, के. पी. सक्सेना जैसे रचनाकारों से फली फूली। वर्तमान में व्यंग्य की तीसरी पीढ़ी में अजातशत्रु, लक्ष्मीकांत वैष्णव, गोपाल चतुर्वेदी, सूर्यबाला, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय, विनोद कुमार शुक्ल, हरीश नवल, बालेन्दु शेखर तिवारी आदि ने सराहनीय एवं महत्वपूर्ण लेखन किया।

हरीश नवल हिन्दी व्यंग्य विधा की तीसरी पीढ़ी के सशक्त हस्ताक्षर हैं। नवल जी ने हिन्दी व्यंग्य साहित्य को और अधिक ऊर्जा देने का कार्य किया है। वे अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त साहित्यकार हैं। वे मुख्यतः व्यंग्य पुरोधा माने जाते हैं। उन्हें 'युवा ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'व्यंग्यश्री सम्मान', 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मान', सहित 17 राष्ट्रीय और 13 अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हैं। डॉक्टर नवल की 52 मौलिक एवं 11 सम्पादित पुस्तकें हैं और 130 पुस्तकों में सहयोगी लेखन है। देश- विदेश के प्रमुख पत्र- पत्रिकाओं में उनकी लगभग 2000 रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

52 देशों में वे हिन्दी और हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। उनकी रचनाएँ 10 विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं, जिनमें फ़िजी देश का विश्वविद्यालय भी है। वे 41 वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे। इंडिया टुडे के साहित्य परामर्शदाता, हिन्द वार्ता के संपादकीय सलाहकार, एन. डी. टी. वी. के हिंदी कार्यक्रम सलाहकार और अंतर राष्ट्रीय पत्रिका 'गगनांचल' के मुख्य संपादक भी रहे। अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित नवल जी के व्यंग्यों में संत कबीर सा फक्कडपन, भारतेंदु हरिश्चंद्र सी ज्वाला और हरिशंकर परसाई सी जीवन्तता के दर्शन होते हैं। उनकी रचनाओं में बागपत के खरबूजे, दिल्ली चढ़ी पहाड़, पीली छत पर काला निशान, डॉलर भाग्य विधाता, दीनानाथ के हाथ, निराला की गली में, माफिया जिंदाबाद, इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ आदि प्रमुख व्यंग्य संग्रह हैं।

हरीश नवल जी ने व्यंग्य में हास्य के पुट के विषय में स्पष्ट कहा है कि "व्यंग्य वाक्य में हास्य का उतना ही इस्तेमाल हो, जितना भोजन में चटनी या मिष्टान्न का..।"

उनकी पुस्तक 'डॉलर भाग्य विधाता' में राजनेताओं पर जो कटाक्ष किया गया है, वो समाज को सोचने के लिए विवश कर देता है। कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं- "हमने कर्णधारों से एकलव्य की भांति दीक्षा ली कि 'स्वराज्य' हम सब की कॉमन जायदाद है, कॉमन जो हो जाये वह किसी का नहीं होता – वह बाद में जान पाए। दस फ्लेटों के गलियारों की बत्ती अकसर गुल रहती है क्योंकि उसकी जिम्मेदारी किसी एक की नहीं होती।"

नवल जी के व्यंग्य की धार पढ़नेवाले को झकझोर कर रख देती है। उन्होंने समाज में विराजमान विडम्बनाओं और विसंगतियों की विद्रूपता को सबके सामने रख दिया है। व्यंग्य लिखने के लिए जिस शैली की आवश्यकता होती है वह निस्संदेह उनके अधिकार क्षेत्र में है। इसका एक उदाहरण ये है कि देश की गौरवशाली संस्था 'भारतीय ज्ञानपीठ' ने 'नई पीढ़ी व्यंग्य प्रतियोगिता' में उनकी पुस्तक 'बागपत के खरबूजे' को युवा ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया। इतना ही नहीं व्यंग्य साहित्य की अनेक पुस्तकों एवं पत्रिकाओं में वरिष्ठ लेखकों ने हरीश नवल के व्यंग्य लेखन को सराहा है। सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रखर आलोचक डॉ. सुरेश आचार्य ने अपनी पुस्तक 'व्यंग्य का समाजदर्शन' में पृष्ठ संख्या 162-164 में स्वतन्त्रता के बाद व्यंग्य के सर्वप्रमुख हस्ताक्षर के रूप में हरिशंकर परसाई का नाम लिया है तथा श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी, रविन्द्रनाथ त्यागी, नरेन्द्र कोहली के बाद हरीश नवल का स्थान सुनिश्चित किया है। वे लिखते हैं-

" हरीश नवल आधुनिक हिन्दी गद्य में व्यंग्य के नवीनतम स्वरूप और समाज चेतना के महत्वपूर्ण संवाहक हैं। "

हरिशंकर परसाई जी के अनुसार – " 'बागपत के खरबूजे' से हरीश नवल का व्यंग्यकार पूरी तरह से सामने आया है। उसे उनके व्यंग्य कथा लेखक और विनोदवृतिकार सचेतक रूप पसंद है। हिन्दी व्यंग्य को उनसे बहुत अपेक्षाएं हैं। "

धर्मवीर भारती के शब्दों में – "हिन्दी व्यंग्यकारों में हरीश नवल का एक अलग स्थान है। उनके व्यंग्य निबंधों में एक महीन मार्ग और एक अभिजात्य सौम्यता है।"

व्यंग्य आलोचक डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी के अनुसार – " हरीश नवल ने व्यंग्य की सत्ता स्थापित की है।"

प्रेम बिहारी मिश्र के शब्दों में – "विश्व में सात आश्चर्य बताए जाते हैं यदि मैं कहूँ कि डॉ हरीश नवल आठवां आश्चर्य है तो मेरे विचार से यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इनके कृतित्व और व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करें तो भानुमती के पिटारे वाली कहावत चरितार्थ होती है।"

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि व्यंग्य विधा के विकास में हरीश नवल जी का अतुल्य योगदान उन्हें हिन्दी व्यंग्य साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में स्थापित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. व्यंग्य का समाजदर्शन, अनुज्ञा प्रकाशन, दिल्ली 2018, पृष्ठ- 162-164
2. डॉलर भाग्य विधाता, न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2022, पृष्ठ- 95
3. निराला की गली में, मेधा बुक्स, दिल्ली, 2008
4. वाया पेरिस आया गांधीवाद, नवराज प्रकाशन, दिल्ली, 2002
5. दिल्ली चढ़ी पहाड़, शुभम् प्रकाशन, दिल्ली, 1997,
6. पीली छत पर काला निशान, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1991